



Model: Horoscope-Matching

Order No: 121121301

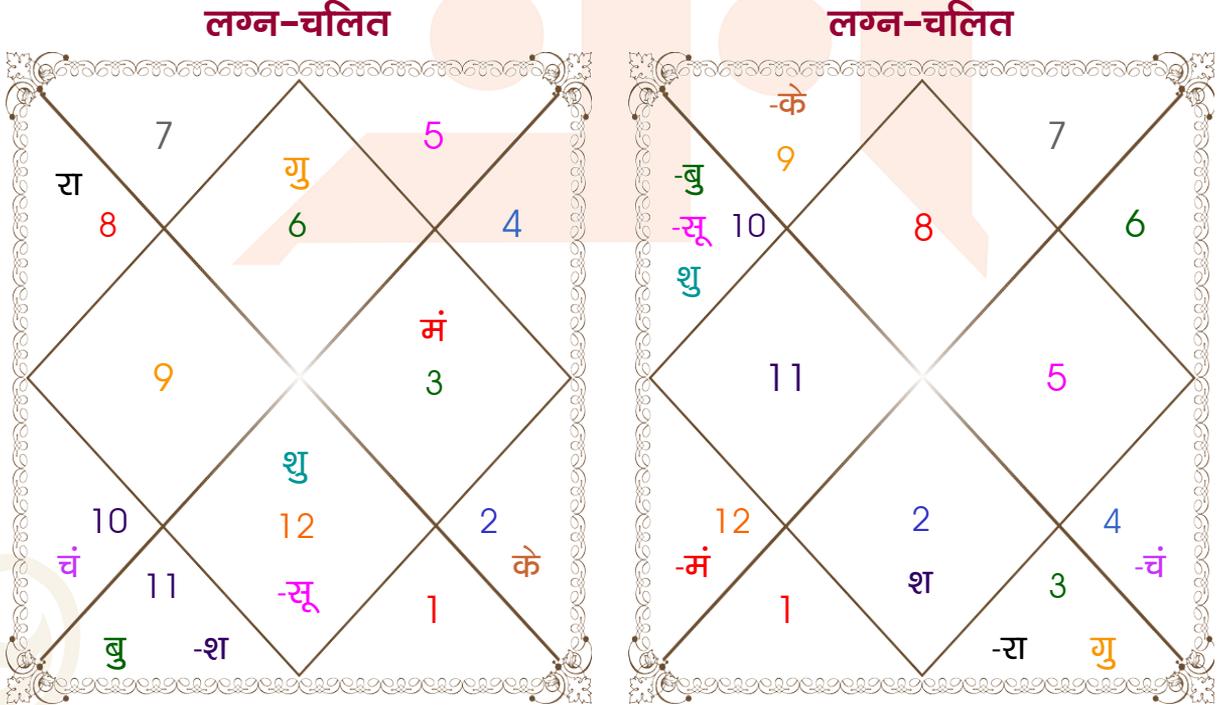
पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
19/03/1993 :	जन्म तिथि	: 28-29/01/2002
शुक्रवार :	दिन	: सोम-मंगलवार
घंटे 19:48:00 :	जन्म समय	: 04:00:00 घंटे
घटी 33:14:48 :	जन्म समय(घटी)	: 51:36:47 घटी
India :	देश	: India
Dharmasala :	स्थान	: Dharmasala
32:14:00 उत्तर :	अक्षांश	: 32:14:00 उत्तर
76:24:00 पूर्व :	रेखांश	: 76:24:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:24 :	स्थानिक संस्कार	: -00:24:24 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:30:04 :	सूर्योदय	: 07:21:17
18:34:10 :	सूर्यास्त	: 17:53:42
23:46:01 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:52:54
कन्या :	लग्न	: वृश्चिक
बुध :	लग्न लग्नाधिपति	: मंगल
मकर :	राशि	: कर्क
शनि :	राशि-स्वामी	: चन्द्र
धनिष्ठा :	नक्षत्र	: पुष्य
मंगल :	नक्षत्र स्वामी	: शनि
1 :	चरण	: 4
सिद्ध :	योग	: आयुष्मान
तैतिल :	करण	: बव
गा-गगन :	जन्म नामाक्षर	: डा-डाली
मीन :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: कुम्भ
वैश्य :	वर्ण	: विप्र
जलचर :	वश्य	: जलचर
सिंह :	योनि	: मेष
राक्षस :	गण	: देव
मध्य :	नाड़ी	: मध्य
मार्जार :	वर्ग	: श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 2मा 2दि	21:38:49	कन्या	लग्न	वृश्चि	23:41:24	शनि 2वर्ष 8मा 22दि
गुरु	05:13:24	मीन	सूर्य	मक	14:56:58	केतु
21/05/2017	24:54:33	मक	चंद्र	कर्क	14:45:06	22/10/2021
21/05/2033	20:22:26	मिथु	मंगल	मीन	13:22:39	21/10/2028
गुरु 10/07/2019	16:58:13	कुंभ व	बुध व	मक	12:19:58	केतु 20/03/2022
शनि 20/01/2022	17:25:06	कन्या व	गुरु व	मिथु	13:21:34	शुक्र 20/05/2023
बुध 27/04/2024	24:52:23	मीन व	शुक्र	मक	18:24:38	सूर्य 25/09/2023
केतु 03/04/2025	01:33:59	कुंभ	शनि व	वृष	14:14:47	चन्द्र 25/04/2024
शुक्र 03/12/2027	22:02:00	वृश्चि व	राहु व	मिथु	02:36:57	मंगल 21/09/2024
सूर्य 20/09/2028	22:02:00	वृष व	केतु व	धनु	02:36:57	राहु 10/10/2025
चन्द्र 20/01/2030	27:49:40	धनु	हर्ष	कुंभ	00:01:57	गुरु 15/09/2026
मंगल 27/12/2030	27:03:46	धनु	नेप	मक	14:35:34	शनि 25/10/2027
राहु 21/05/2033	01:37:48	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	23:02:30	बुध 21/10/2028

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

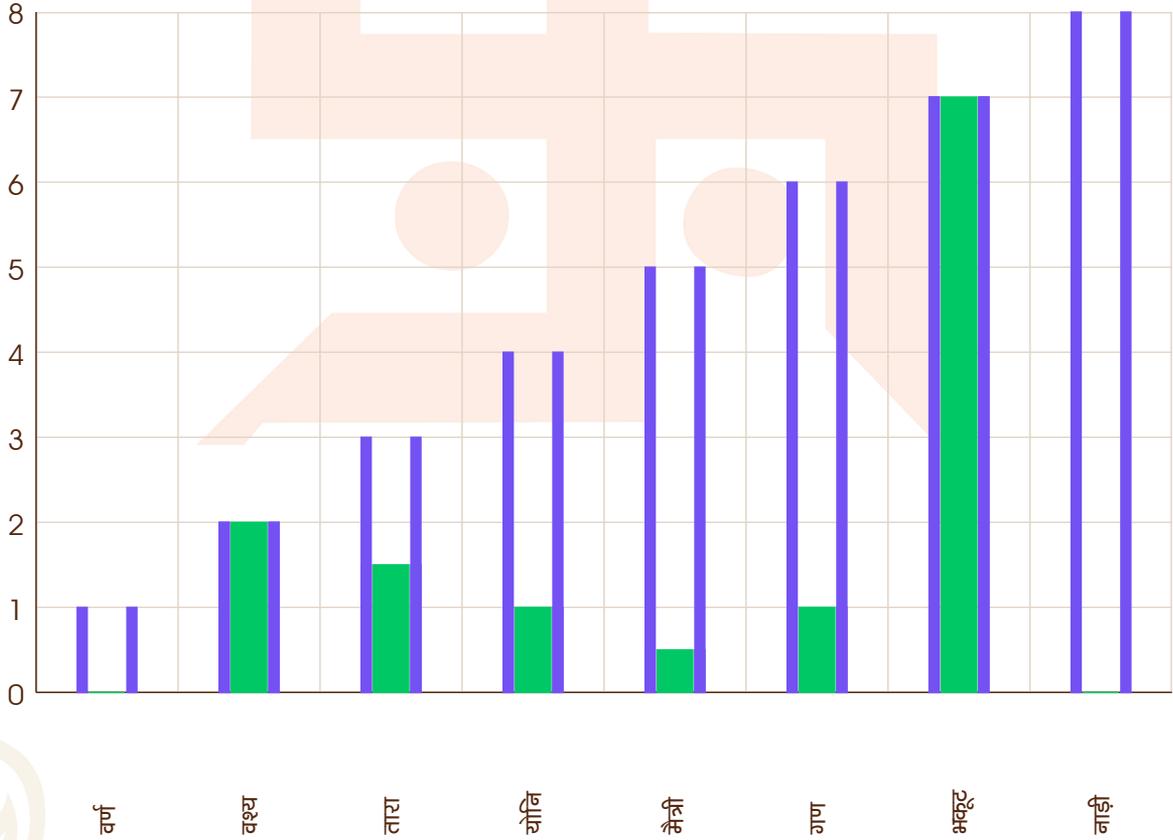
23:46:01 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:54



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	मेष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	चन्द्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाडी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	13.00		

कुल : 13 / 36



अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Ms. का नक्षत्र पुष्य है।

V का वर्ग मार्जार है तथा Ms. का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार V और Ms. का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

V मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

V तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

V का वर्ण वैश्य है तथा Ms. का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि Ms. का वर्ण V के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। Ms. अति अहंकारी, शाहखर्च एवं दिखावा करने वाली होगी। Ms. को हमेशा यह महसूस होता रहेगा कि उसका पति निम्न दर्जे का है तथा बहुत कम कमाता है। इस कारण से उसमें निराशा की भावना घर कर कर सकती है।

वश्य

V का वश्य जलचर है एवं Ms. का वश्य भी जलचर है अर्थात् दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों की शारीरिक स्थिति, स्वभाव, पसंद एवं नापसंद एक ही तरह के होंगे। दोनों के बीच अगाध प्रेम एवं सौहार्द बना रहेगा तथा समान दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी समझ होने के कारण एक-दूसरे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते रहेंगे। दोनों एक-दूसरे के कामों में मदद करते रहेंगे तथा परिवार की प्रगति एवं समृद्धि में महती योगदान देंगे।

तारा

V की तारा वध तथा Ms. की तारा क्षेम है। V की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। V बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। V को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु Ms. लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

V की योनि सिंह है तथा Ms. की योनि मेष है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी-कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार

में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व क्लेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूV मिलान में ग्रह मैत्री कूV में V का राशि स्वामी Ms. के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि Ms. का राशि स्वामी V के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोV एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

V का गण राक्षस तथा Ms. का गण देव है। अर्थात् Ms. का गण V के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण V निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही V का Ms. के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। Ms. हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

V एवं Ms. की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा V व Ms. को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

V की नाड़ी मध्य है तथा Ms. की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूV मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात् यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में V एवं Ms. का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

V की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर तथा Ms. की जन्म राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। जल एवं पृथ्वी तत्व में नैसर्गिक समानता होने के कारण V और Ms. में स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी जिससे आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान सामान्य रहेगा।

V की राशि का स्वामी शनि तथा Ms. की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं शत्रु हैं। अतः इसके प्रभाव से यदा कदा आपसी संबंधों में मतभेद तथा विरोध का भाव उत्पन्न होगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान केन्द्रित रहेंगे जिससे संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। V और Ms. की परस्पर प्रवृत्ति श्रेष्ठता तथा आलोचना की रहेगी जिससे भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी तथा वैवाहिक जीवन में विषमता का सामना करना पड़ेगा।

V और Ms. की राशियाँ परस्पर सप्तम भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह शुभ भकुV माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति मन में प्रेम सहयोग तथा सहानुभूति का भाव उत्पन्न होगा एवं परस्पर सुख दुख में पूर्ण सहयोग करने के लिए तत्पर होंगे। आप दूसरे के अस्तित्व को सम्मानजनक ढंग से स्वीकार करेंगे तथा एक दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप कम ही करेंगे। अतः परस्पर दाम्पत्य संबंधों में मधुरता में वृद्धि तथा वैवाहिक जीवन की सुखद क्षणों की अनुभूति करने में सफल होंगे।

V और Ms. दोनों का वश्य जलचर है। अतः इसके प्रभाव से इनकी अभिरुचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी समान रहेंगी। साथ ही दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में सफल होंगे। अतः जीवन सुखमय रहेगा।

V का वर्ण वैश्य है तथा Ms. का वर्ण ब्राह्मण है। अतः इसके प्रभाव से V की प्रवृत्ति धनार्जन में रहेगी तथा धन को विशेष महत्व देंगे लेकिन Ms. धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यों को करने में तत्पर रहेंगी।

धन

V और Ms. दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूV भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

V और Ms. दोनों की नाड़ी मध्य है। अतः इन दोनों पर नाड़ी दोष का प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से दोनों का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इससे V और Ms. दोनों उदर संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे जिससे लीवर विशेष प्रभावित रहेगा। परन्तु मंगल का इनके स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः इससे कष्ट की गंभीरता में न्यूनता आएगी परन्तु सामान्य कष्ट वे समय समय पर प्राप्त करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस दोष के प्रभाव से V को धातु संबंधी तथा Ms. को मासिक धर्म संबंधी परेशानी हो सकती है। अतः उत्तम वैवाहिक दृष्टि से यह मिलान अनुकूल नहीं होगा जिससे यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से V और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त V और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से V और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार V और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबंध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबंधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Ms. अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामंजस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृत्ति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबंध अनुकूल रहेंगे तथा

उनकी ओर से Ms. पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Ms. अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबंधों में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

V तथा उनकी सास के आपसी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा कई मामलों में उनके मध्य काफी प्रबल मतभेद समय समय पर दृष्टि गोचर होंगे। अतः यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता के भाव का प्रदर्शन किया जाय तो इन मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा आपसी संबंधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी जिससे स्नेह एवं सम्मान का भाव बना रहेगा।

लेकिन ससुर के साथ में V के संबंध अच्छे रहेंगे तथा वह उन्हें अपने पिता की तरह मान सम्मान तथा सेवा का भाव प्रदान करेंगे। साथ ही समयानुसार वह V को अपनी ओर से बहुमूल्य तथा आवश्यक सलाह भी प्रदान करते रहेंगे एवं उन्हें अपने पुत्र के समान अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगे। साले एवं सालियों के साथ ही V के संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे वांछित आदर सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही उनसे सामंजस्य का भाव भी रहेगा। इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण V के प्रति अनुकूल ही रहेगा।